पाठ - 13
आख़िरत के दिन पर ईमान

الدرس الثالث عشر - هندي
الإيمان باليوم الآخر والقضاء والقدر

5. आख़िरत के दिन पर ईमान : इस ईमान में वे सभी चीज़ें दाख़िल हैं जिनके बारे में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है कि वे मृत्यु के बाद घटित होंगे, जैसे क़ब्र का अज़ाब, और उसकी नेमतें और उसी तरह क़ियामत के दिन जिन सख़्तियों एवं कठिनाइयों से जूझना पड़ेगा, पुल सेरात, मीज़ान, हिसाब किताब, सहीफ़ों का प्रसार और लोगों के बीच उसका उड़ना जिसे कुछ लोग अपने दाहिने हाथ से पकड़ेंगे तो कुछ लोग बायें हाथ से। और इसमें यह भी शामिल है कि हम रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिलने वाले हौज़ पर ईमान लाएं और यह मानें कि तमाम नबियों का हौज़ होगा जैसा कि सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पता चलता है।

उसी तरह उसमें जन्नत व जहन्नम, मोमिनों को अल्लाह का दीदार और अल्लाह तआला से बातचीत आदि पर ईमान लाना भी शामिल है जिनका उल्लेख कुरआन करीम और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में किया गया है। अतएव उन सभी चीज़ों पर उस तरीक़े से ईमान लाना और उनकी तसदीक़ करना ज़रूरी है जैसा कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है।

6. क़ज़ा व क़द्र पर ईमान : इस संबंध में चार चीज़ों पर ईमानलाना ज़रूरी है।

क. इस कायनात में जो कुछ हो रहा है या जो कुछ होने वाला है, उन सभों का ज्ञान अल्लाह को है। और बन्दों की परिस्थितियों, उनकी रोज़ी रोटी, उनकी मौत आदि समस्त मामलों का ज्ञान उसे है। और उससे कुछ भी छुपा नहीं है अल्लाह खुद फ़रमाता है: ﴿إِنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ [التوبة:١١٥]

यानी, ''अल्लाह तआला हर चीज़ को जानने वाला है (सूरह अलतौबा, आयत 115)

ख. अल्लाह ने जिन चीज़ों का फैसला किया है, उसे लिख लिया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ﴾ [يس:١٢]

यानी, ''और हमने हर चीज़ को एक वाज़ेह किताब में ज़ब्त कर रखा है।

ग. अल्लाह की मर्ज़ी पर ईमान लाएं। यानी अल्लाह जो चाहेगा वह होगा और जो नहीं चाहेगा वह नहीं होगा। जैसा कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है:

﴿قَالَ كَذَلِكَ اللهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ﴾ [آل عمران:٤٠]

यानी, ''उसी तरह से अल्लाह जो चाहता है, करता है (सूरह आलेइमरान, आयत 40)

घ. अल्लाह ने उन चीज़ों को उनके अस्तित्व में लाने से पहले पैदा किया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَاللهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ﴾ [الصَّفات:٩٦]

यानी, ''यद्यपि तुम्हें और तुम्हारी बनायी हुई चीज़ों को अल्लाह ही ने पैदा किया है।''